DATE 8|8|19

पाठ - 11

बालगोबिन भगत

प्रश्न - उत्तर

प्र०-1 खेती-बाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

उ०- बालगोबिन भगत परिवार रखते हुए खेती-बाड़ी करते हुए भी साधु थे। उनमें साधु जैसी सभी विशेषताएँ विद्यमान थी। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे, व्यवहार में वे सीधे और खरे थे सबसे स्पष्ट बात करते थे, बिना किसी कारण किसी से झगड़ा नहीं करते थे। दूसरों की चीजो को इस्तेमाल में लाना तो दूर बिना पूछे छूते भी नहीं थे। दूसरों के खेतों में में कभी गंदगी नहीं फैलाते थे। वे कबीर दास जी को 'साहब' मानते थे। खेत में जो कुछ पैदा होता, उसे साहब के दरबार में 'भेंट' स्वरुप रख देते थे।

प्र०-2 भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

उ०- बेटे की मृत्यु के बाद बालगोबिन भगत की पुत्रवधू

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

ही उसकी देख-रेख करने वाली बची थी किंतु भगतजी उसे भी उसके भाई के साथ भेज देते हैं। पुत्रवधू यह सोचकर उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहती कि बुढ़ापे में उनके लिए भोजन कौन बनाएगा, बीमार पड़ने पर उनकी देखभाल कौन करेगा? कौन उनकी दवा-पानी का प्रबन्ध करेगा?

प्र०-3 भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

उ०- जब बालगोबिन भगत का इकलौता बेटा मरा तो उसने उसे आंगन में एक चटाई पर लिटाया और सफेद कपड़े से ढांक दिया। उसके ऊपर फूल और तुलसी बिखेर दी। सिरहाने एक दीपक जला दिया। उसके सामने जमीन पर बैठकर भगत जी अपने पुराने स्वर और तल्लीनता के भाव से गीत गाते रहे। गाते-गाते वे बीच-बीच में कहते कि यह रोने का नहीं उत्सव मनाने का समय है। आत्मा और परमात्मा का मिलन हुआ है, बिरहिनी अपने प्रेम से जा मिली है, सबसे बड़ा आनन्द का समय यही है।

प्र०-4 भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

उ०- बालगोबिन भगत एक संत स्वभाव का व्यक्तित्व था। जैसा भी मिला उसे पाकर संतोष धारण कर लिया। वे सामान्य कद के गोरे-चिट्टे व्यक्ति थे। लगभग साठ वर्ष से ऊपर की आयु होने के कारण बाल सफेद हो गए थे।

वे नाम मात्र के कपड़े पहनते थे जिनमें एक लंगोटी और सिर पर कबीरपंथियों जैसी कनपटी टोपी थी। गले में तुलसी की जड़ों की बेडौल माला पहने रहते थे।

प्र०-5 बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी ?

उ०- बालगोबिन भगत अपने जीवन के अन्तिम दिनों में बीमार रहने लगे थे। उनका स्वास्थ दिन-प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा था, फिर भी उन्होंने अपने नियम नहीं छोड़े। दोनों समय स्नान करना, दोनों समय नियमित रुप से खाना और खेत-खलिहानों की देखभाल करने संबंधी दिनचर्या को देखकर लोग अचरज में रह जाते थे।

प्र०-6 पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

उ०- गर्मी के दिनों में बालगोबिन भगत अपने घर के आँगन में ही आसन लगा लेते थे। वहीं गाँव

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

के कुछ लोग आ जाते थे। खंजड़ी और तालियों की ताल में बालगोबिन भगत गीत गाते, पद गाते और उन पदों को दोहराते। बालगोबिन भगत के गीत की विशेषता यह थी कि उनका स्वर धीरे-धीरे ऊँचा होने लगता था, स्वर एक निश्चित ताल और गति के चढ़ाव से आगे बढ़ता हुआ श्रोताओं के मन को भी ऊपर उठा देता था।

प्र०-7 कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।

उ०- पाठ के आधार पर कई ऐसे प्रसंग आए हैं जिनसे यह पता चलता है कि बालगोबिन भगत के गीत की विशेषताएँ प्रचलित समाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। सर्वप्रथम उनके इकलौते बेटे की मृत्यु को ही लें तो देखने को मिलता है कि वे बेटे की मौत पर शोक मनाने की अपेक्षा गीत गा रहे हैं और अपनी पुत्रवधू को भी रोने की अपेक्षा उत्सव मनाने को कहते हैं। उन्होंने अपने बेटे का क्रिया-कर्म करते समय भी सामाजिक मान्यताओं को नहीं माना।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

प्र०-8 धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं? उस माहौल का शब्द चित्र - प्रस्तुत कीजिए।

उ०- आषाढ़ के महीने में बरसात के बाद रिमझिम लग जाती है। बच्चे धान के खेतों में उछलने - कूदने लगते हैं। लोग धान की रोपाई करने लगते हैं। बालगोबिन भी कीचड़ की लथपथ जब अपने खेत में धान की एक - एक पौधे को अँगुली से पकड़कर खेत में रोप रहे हैं तब वे अपने मधुर स्वर में संगीत को सीढ़ियों पर चढ़ाते हुए ऊँचा ले जाते हैं।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera